द्विमासिक समाचार पत्रिका

ई-समाचार

अंक - 07 सितंबर-अक्तूबर वर्ष - 2015

कार्यस्थल में महिला यौन उत्पीड़न पर कार्यशाला

प्रशिक्षण देते डॉ. एल.आर. अग्रवाल

संस्थान की महिला शिकायत एवं निवारण समिति द्वारा 04 सितंबर 2015 को वर्चुअल क्लास रूम में "कार्यस्थल पर महिला यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम 2013" विषय पर प्रशिक्षण सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के उपनिदेशक प्रो. एस.त्रिपाठी ने किया और डॉ. गुणसेकरण, कुलसचिव, प्रो.एस. रॉय, संकायाध्यक्ष, एफ एवं पी तथा प्रो. वी.आर.पेदिरेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. एल.आर.अग्रवाल, पूर्व-कुलपति, महाऋषि विश्वविद्यालय, लखनऊ उपस्थित थे। इसके साथ ही उनके सहयोगी एवं प्रशिक्षक के रूप में श्री विवेक कुमार भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ अतिथियों का पुष्पगुच्छ के स्वागत के साथ हुआ। संस्थान के उपनिदेशक ने अपने संबोधन में कहा कि आज महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचारों को रोकने की आवश्यकता है। सम्यक जानकारी न होने तथा अपनी मानसिक चेतना पर नियंत्रण न रख पाने के कारण इस तरह के उत्पीड़न की शिकायतें सुनने में आती रहती है। हमें प्रत्येक महिलाओं को सम्मान करना आना चाहिए। उन्होंने संस्थान की महिला शिकायत एवं निवारण समिति को बधाई दी और कहा कि इस तरह के कार्यक्रम निरंतर आयोजित होने से संस्थान के कर्मचारियों को इन विषयों की अधिक जानकारी हो सकेगी। उन्होंने अपने संबोधन में कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

यह कार्यक्रम दो सत्र में आयोजित किया जाना था। प्रथम सत्र संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों और द्वितीय सत्र संस्थान छात्रों के लिए आयोजित किया जाना था। इस कार्यक्रम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य संकाय सदस्यों, अधिकारियों, स्टाफ एवं छात्रों को इस अधिनियम के प्रावधानों की संपूर्ण जानकारी प्रदान कर प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम के दौरान मुख्य वक्ता डॉ. अग्रवाल ने इस विषय के धरातल पर जाते हुए श्रोताओं के समक्ष अच्छे उदाहरणों के साथ व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान इन विषय के ऐतिहासिक विकास, विधायी यात्रा, इस अधिनियम की मुख्य विशेषता, सर्वेक्षण एवं साहित्य पर मुकद्दमा कानून, शिकायत तंत्र प्रक्रिया, आईसीसी-संयोजन – शिकायतकर्ता महिला के प्रति नियोक्ता के अधिकार, शक्तियाँ, कार्य, दायित्व आदि के प्रमुख जानकारी प्रदान कर सभी को प्रशिक्षित किया।

सभी उपस्थित लोगों ने इस विषय पर उत्सुकतावश प्रश्न पूछते हुए अपना ज्ञानवर्धन किया। किन्हीं अपरिहार्य कारणों की वजह से संस्थान छात्रों के लिए द्वितीय सत्र का आयोजन नहीं किया जा सका। समिति ने आशा व्यक्त की कि आगामी दिनों में संस्थान छात्रों के लिए भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम में डॉ. सीमा बाहिनीपति के साथ समिति के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

शिक्षक दिवस

छात्र जिमखाना की सामाजिक-सांस्कृतिक परिषद द्वारा दिनांक 05 सितंबर 2015 को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, द्वितीय पूर्व राष्ट्रपति की जन्म पर शिक्षक दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान स्पीकमैक के माध्यम से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें डॉ. इलिनिया सिटारिस्टी ने चाउ नृत्य प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. सिटारिस्टी विदेश मूल की प्रथम ओडिशा नृतिका है जिन्हें ओडिशा नृत्य में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए पद्मश्री उपाधि प्रदान की गई है।

"सिनिवेव" सिनेमेटिक सोसायटी विजयी

संस्थान की सिनिवेव, सिनेमेटिक सोसायटी ने भा.प्रौ.सं. दिल्ली के सांस्कृतिक कार्यक्रम "रैनडेजवॉस 2015 में "फ्रीडम" विषय पर 48 घंटा फिल्म निर्माण प्रतियोगिता में देश के विभिन्न अन्य बड़े प्रतिद्वंदी संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए विजय प्राप्त की। यह फिल्म दो नवयुवक लड़कों, समाज एवं उनकी धारणा पर आधारित है जो स्वतंत्रता के अर्थ को अपनी-अपनी तरह से परिभाषित करते हैं। फिल्म का निर्देशक संस्थान छात्र श्री तुषार गौतम एवं संदीप परमार ने किया। संपादन कार्य श्री तुषार गौतम, सुदीर सिंह जामवल ने किया। इस फिल्म के कहानीकार श्री तुषार गौतम एवं अविजीत वर्मा है। फिल्म में मुख्य भूमिका में तुषार गौतम एवं संदीप परमार है।

संपादकीय..

ई-समाचार का 07वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अंक में हमने जहाँ संस्थान की मुख्य गतिविधियों पर प्रकाश डाला है वहीं दीक्षांत समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा जैसी प्रमुख गतिविधियों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

दीक्षांत समारोह किसी भी संस्थान एवं उसके छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस समारोह में जहाँ संस्थान देश के युवा शिल्पकार, नेतृत्वकर्ता, उद्यमी एवं अभियंताओं को तैयार कर गर्वान्वित होता है वहीं छात्रगण वर्षों की अपनी तपस्या का फल प्राप्त करते है और अपने आगामी योजनाओं के मार्ग पर प्रशस्त होते हैं। संस्थान छात्रों को न सिर्फ शिक्षा प्रदान करता है बल्कि उन्हें एक श्रेष्ठ इंसान बनाने के लिए भी प्रयत्नशील रहता है।

यह वर्ष संस्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, संस्थान ने अपने स्थाई परिसर से कार्य करने के स्वप्न को साकार किया और कुछ सुविधाओं के साथ संस्थान छात्रों, संकायों एवं स्टाफ सदस्यों के साथ स्थानांतरित किया । इस अंक में हमने हिंदी दिवस का अनुपालन करते हुए हिंदी पखवाड़ा के आयोजन से संबंधित सूचनाओं को भी संकलित किया है। संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालन के लिए प्रतिबद्ध है और इसके कार्यान्वयन की दिशा में हमेशा प्रयासरत रहता है। हमेशा से जीवन में गुरु का अत्याधिक महत्व रहा है बिना गुरु के सही मार्ग मिलना असंभव होता है और उनके बिना पथ अंधकारमय लगता है। गुरु अपनी सबुद्धि के माध्यम से अपने शिष्यों में ज्ञान के अमृत को पोषित करता है और शिष्य का धर्म होता है कि वह हमेशा अपने गुरु की कृपा के लिए कृतज्ञ रहें। इसी संकल्पना के साथ संस्थान के छात्रों ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षक दिवस का आयोजन किया। इस अंक में हमने महिला शिकायत निवारण समिति द्वारा संस्थान के सदस्यों को कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न जैसे विषयों पर प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबंधित समाचारों को प्रकाशित किया है। इसके साथ ही इस अंक में महात्मा गांधी के जन्मदिन पर आयोजित स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम से संबंधित समाचार को भी प्रकाशित किया है।

इस अंक में साहित्य मंच के अधीन हिंदी साहित्य का इतिहास के रचनाकार " आचार्य रामचंद्र शुक्ल" के 131 वें जन्मदिवस पर उनकी रचना "विनीता" को संकलित किया है। - **नितिन जैन**

चतुर्थ दीक्षांत समारोह

संस्थान का चतुर्थ दीक्षांत समारोह का आयोजन 12 सितंबर 2015 को संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी, श्री एस.के.रुंगटा, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल एवं संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी.राजकुमार के साथ अन्य जनगणमान्य उपस्थित थे।

समारोह का आरंभ शैक्षणिक समागम तथा राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ। श्री एस.के. रुंगटा, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल ने दीक्षांत समारोह के आरंभ की औपचारिक घोषणा की। संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी.राजकुमार ने अपने संबोधन के प्रारंभ में कहा कि यह हमारे लिए बड़े ही गर्व का विषय है कि माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति जुब्रिन इरानी ने हमारे आमंत्रण को स्वीकार किया आज हमारे बीच मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित हैं जिसमें हम 109 प्रौद्योगिकी स्नातक, 44 प्रौद्योगिकी निष्णात, 50 विज्ञान निष्णात, 12 पीएच.डी, छात्रों को उपाधि प्रदान करेंगे।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर के लिए भुवनेश्वर शहर में सात वर्ष की यात्रा बेहद सुखद रही जहाँ संस्थान वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं स्थानीय उपयुक्त के अनुरूप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में निरंतर एवं दृढ़तापूर्वक प्रयासरत रहा। मैंने 22 अप्रैल 2015 को अपना कार्यभार ग्रहण किया और तब से संस्थान को एक नई ऊचाई तक पहुँचाने का दृढ़संकल्प लिया है।

इसके साथ ही उन्होंने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल का शिलान्यास 12 फरवरी 2009 को किया गया था और निर्माण गतिविधियाँ 2011 से प्रारंभ हुई थी। निर्माण प्रक्रिया में थोड़ा समय लगा परंतु हमने इस वर्ष 800 छात्रों की क्षमता वाले महानदी छात्रावास (पुरुष आवास), 200 छात्राओं की क्षमता वाले सुबर्णरेखा छात्रावास (महिला आवास), 40 स्टाफ क्वाटर, 200 सीट की क्षमता वाले कम्यूनिटी सेंटर, 40 रुम की क्षमता वाले अतिथि गृह और एक छोटा सा शॉपिंग कॉम्पलेक्स को अधिकृत किया है। मुख्य प्रशासनिक भवन तथा अन्य विद्यापीठों जैसे आधारीय विज्ञान, विद्युत विज्ञान, आधारिक संरचना, यांत्रिकी विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध के भवन, प्रथम वर्षीय छात्र कॉम्पलेक्स और संकाय क्वाटर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। संस्थान बहुत ही जल्द अपने स्थाई परिसर अरगलु से कार्य करना प्रारंभ करेगा। अगर योजना अनुसार कार्य हुआ तो वर्ष 2016 के जनवरी माह से प्रथम वर्ष के छात्रों की कक्षाएं स्थाई परिसर से संचालित की जाएगी।

रिपोर्ट प्रस्तुत करते निदेशक

इसके साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हमारा सपना तब पूरा हुआ जब हमने दिनांक 18 जुलाई 2015 को अपने कुछ संकाय सदस्यों, स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों के साथ अपने स्थाई परिसर में स्थानांतरित किया। इसके अतिरिक्त हमने कई नई आधारभूत सुविधाओं का भी सृजन किया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त न हो पाता तो शायद मैं अपने कर्तव्यों का निर्वाहन ठीक ढंग से न कर पाता । इसके लिए मैं विशेष रूप से राज्य सरकार का आभारी हूँ। उन्होंने कई मायनों में सहायता प्रदान कर संस्थान के स्थाई परिसर की निर्माण प्रक्रिया को संबल प्रदान किया है।

इसके साथ ही उन्होंने जानकारी दी कि संस्थान का परिसर हरित परिसर, पर्यावरण हितेषी होगा जिसमें विषय आधारित पौधरोपण, प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन एवं शून्य ऊर्जा आहरण जैसी सुविधाएं होंगी। गत तीन महीनों में संस्थान ने विशाल पौधरोपण अभियान प्रारंभ किया और लगभग 5000 पेड़ों का पौधोरण किया जा चुका है।

इसके साथ ही उन्होंने शैक्षणिक कार्यक्रम पर जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि संस्थान ने वर्ष 2008 में सिविल, विद्युत, यांत्रिकी अभियांत्रिकी के 94 छात्रों के साथ अपनी यात्रा शुरु की थी और वर्तमान में कुल 1038 (बी.टेक-589, एम.टेक-71, एम.टेक-पीएच.डी – 66, एम.एससी पीएच.डी – 14 – पीएच.डी 171) छात्र है और लगभग 100 संकाय सदस्यों, एक चेयर प्राध्यापक के साथ कुल 10 अधिकारी एवं 70 सहायक स्टाफ सदस्य है जिन्होंने संस्थान द्वारा तैयार की किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संस्थान विद्युत, यांत्रिकी एवं कंप्यूटर विज्ञान, आधारिक संरचना एवं धातुकार्मिकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी में बी.टेक, 9 विधाओं में एम.टेक पाठ्यक्रम, 05 विषयों (गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, भौमिकी एवं पर्यावरण एवं जलवायु विज्ञान) में एम.एससी एवं सभी विद्यापीठों में पीएच.डी पाठ्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान में कुल 07 विद्यापीठ है। शैक्षणिक वर्ष 2014-15 में संरचनात्मक अभियांत्रिकी, परिवहन अभियांत्रिकी, यांत्रिकी प्रणाली डिजाइन, ऊष्म विज्ञान एवं अभियांत्रिकी, शक्ति प्रणाली अभियांत्रिकी जैसे नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत की गई है। इसके साथ यह भी जानकारी दी कि इस वर्ष 2014-15 में कुल 24.00 करोड़ रुपए के प्रयोगशाला उपस्करों की भी खरीद की गई है।

अनुसंधान और विकास गतिविधियों पर जानकारी प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने गत वर्ष के दौरान 38 परियोजनाओं के माध्यम से संस्थान ने रु. 24.42 करोड़ की राशि प्राप्त की हैं। इसमें एम.ओ.ई.एस., एम.एच.आर.डी., आई.एस.आर.ओ., आई.एन.सी., ओ.आई.एस., यूजी-यू.के., ई.आर.आई, डी.एस.टी., डी.ई.आई.टी.वाई, बी.आर.एन.एस., आई.आई.टी.एस जैसी प्रमुख वित्त पोषित एजेंसियाँ है।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम के अधीन उन्नत भारत अभियान के निष्पादन कार्य में भी संलिप्त है। संस्थान ने उन्नत भारत अभियान के तहत दो गाँवों को अंगीकृत किया है जहाँ संकाय सदस्य एवं छात्र वहनीय प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, वहनीय आवास, नवीकरणीय ऊर्जा के प्रोयग में जागरूकता कार्य में सक्रिय रूप से भागीदारी कर रहे है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने समुद्र-पर्यावरण-भूमि अंतर्क्रिया की जाँच की सहायता के लिए बंगाल की खाड़ी पर वैधशाला स्थापित करने हेतु प्रथम किश्त के रूप में 9.23 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है।

इसके साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि अपनी स्थापना के सात वर्ष के भीतर ही संस्थान ने ज्ञान के सृजन के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जरनलों में 688 से अधिक मौलिक अनुसंधान पत्र एवं 21 पुस्तकें प्रकाशित कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त भारत एवं विदेशों में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में 388 पेपर प्रस्तुत किए है और 10 भारतीय पेटेंट फाइल किया गया। हमारे छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में तकनीकी विषयों में प्रस्तुति की है। वर्तमान वर्ष के दौरान हमारे संकाय, स्टाफ एवं छात्रों ने अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों के

माध्यम से विभिन्न शैक्षणिक, प्रतिष्ठा, सम्मान एवं पुरस्कार, विशिष्ट फैलोशिप, एसोशिएटशिप, नामित लैक्चरशिप, इच्छित मैडल एवं पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

संस्थान विश्व के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संगठनों के साथ सक्रिय रूप में सहयोगात्मक अनुसंधान कार्य में संलिप्त है। इनमें से कुछ सहयोगात्मक विश्वविद्यालयों में शामिल हैं – वार्विक मैनुफैक्चरिंग ग्रुप, वार्विक विश्वविद्यालय, यू.के., वाशिंगटन विश्वविद्यालय, सेंट लूईस, यू.एस.ए., मैसाचुसैट्टस विश्वविद्यालय, यू.के., नेशनल ओसेनोग्राफी सेंटर (एन.ओ.सी) यू.के., वुड्स होल ओसेनोग्राफिक इंस्टीट्यूट, यूएसए, कॉन्सेपिसयन विश्वविद्यालय, चिलि, सुर्रे विश्वविद्यालय, लंडन, यू.के., मैनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू.के., ब्रिटिश यूनिवर्सिटी, कोलंकिया, क्यूबेक विश्वविद्यालय, कनाडा., वाटरलू विश्वविद्यालय, कनाडा, यार्क विश्वविद्यालय, कनाडा और संयुक्त अनुसंथान, छात्र इंटर्नशीप एवं संकाय सदस्यों ने कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय का दौरा किया।

इसके साथ ही उन्होंने बताया कि संस्थान ने सतत् सिक्षा के माध्यम से अनेक कार्यशालाएं आयोजित की है। इसके साथ यह भी बताया कि वर्ष 2014-15 के दौरान 27 कंपनियों ने कार्य नियोजन के लिए संस्थान का दौरा किया है। इस दौरान 69 छात्रों को नियोजित किया गया जिसमें अधिकतम वार्षिक वेतन के रूप में रु. 13 लाख और न्यूनतम वार्षिक वेतन के रूप में 7.5 लाख प्राप्त हुआ। वर्ष 2015 की ग्रीष्मकालीन अवधि के दौरान छात्रों ने इंटर्नशिप कार्य हेतु देश और विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों/ संस्थानों में सहभागिता की। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि संस्थान की महिला शिकायत निवारण समिति ने भी कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न जैसे प्रमुख विषयों पर जानकारी प्रदान करने के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए है।

संस्थान की सभी गतिविधियाँ तब तक संभव नहीं हो पाती जब तक इसके हिस्सेदार संकाय, स्टाफ सदस्यों, ऐजेंसियाँ एवं औद्योगिकी अभिकर्ता अनुसंधान एवं विकास सलाहकारिता, अन्य संगठनों के वृत्तिकों एवं हमारे पूर्व छात्रों की सहभागिता न होती। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में संस्थान के स्नातक छात्रों, उपाधि प्राप्तकर्त्ताओं एवं पदक विजेताओं को बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कमाना की।

कार्यक्रम का समापन श्री रुंगटा, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल के धन्यवाद ज्ञापन से संपन्न हुआ।

संस्थान के पदक विजेता

राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक विजेता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर प्रतिवर्ष अपने छात्रों को उनकी श्रेष्ठतम शैक्षणिक एवं अन्य क्रियाकलापों में योग्यता अर्जन के लिए पुरस्कृत करता है। इस वर्ष के पदक एवं पुरस्कार विजेता निम्नलिखित हैं –

श्री सुसांत सचन, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ को संपूर्ण स्नातक (प्रतिष्ठा) छात्रों में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने पर भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

श्री सौभाग्य कर्माकर, सिविल अभियांत्रिकी, श्री श्रीराम वेंकटेश, विद्युत विज्ञान, सुसांत सचनयांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ को अपने-अपने विद्यापीठों के विषयों में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने पर संस्थान के रजत पदक से सम्मानित किया गया।

श्री प्रतीक नायक को सिविल अभियांत्रिकी में संपूर्ण प्रौद्योगिकी निष्णात (एम.टेक) छात्रों मे श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने पर संस्थान निदेशक के स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

श्री प्रतीक नायक, आधारिक संरचना विद्यापीठ, श्री पोत्तपुकला प्रवीण कुमार, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ, श्री चंद्राधर एस, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ, श्री लक्ष्मण कुमार मल्ला, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ,

सुश्री श्रीजा दास, खनिज, धातुकर्म एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विद्यापीठ को अपने-अपने संबंधित विद्यापीठों में प्रौद्योगिकी निष्णात (एम.टेक) में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने हेतु संस्थान रजत पदक से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि का संबोधन

मानव संसाधन विकास मंत्री

दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी ने सर्वप्रथम अपने संबोधन में सभी उपाधि प्राप्तकर्त्ता को बधाई दी और उनको रोजगार तलाश करने के बदले रोजगार पैदा करने के लिए तैयार होने का आह्वान किया। इसके साथ ही उन्होंने सभी छात्रों को स्टैंड अप एवं स्टार्ट अप इंडिया करने की अपली की। उन्होंने अपने संबोधन में सभी भा.प्रौ.सं. के छात्रों को केंद्र की योजना को कार्यान्यवित करने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि सरकार इससे प्रारंभ करने के लिए प्रारंभिक धनराशि उपलब्ध कराएगी । उन्होंने अपने संबोधन में उन्नत भारत अभियान के अधीन संस्थान द्वारा अंगीकृत किए गाँवों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने छात्रों को उनकी शिक्षा के लाभ से समुदाय को लाभान्वित करने पर बल दिया। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने छात्रों के उज्जवल भविष्य की कमाना के साथ सभी से देश के हितों पर प्रकाश डालने पर जोर दिया।

हिंदी पखवाड़ा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में दिनांक 07 से 21 सितंबर 2014 के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 07.09.2015 को संस्थान के कर्मचारियों के लिए आयोजित "निबंध" प्रतियोगिता के साथ हुआ। दिनांक 09.09.2015 को संस्थान के कर्मचारियों के लिए "टिप्पण एवं प्रारूप लेखन" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 12.09.2015 को संस्थान के स्थाई परिसर में संस्थान छात्रों के लिए "निबंध" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 13.09.2015 को संस्थान छात्रों के लिए "वाद-विवाद एवं आवाज़ दिल की" नामक एक नई प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका उद्देश्य संस्थान के छात्रों की अभिव्यक्तियों को एक मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों ने भाग लिया। इसी दिन 16.30 बजे "जीवन प्रबंधन" विषय पर डॉ. नीरज शर्मा का

व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने जीवन के प्रबंधन के कई पहलुओं पर अपने अनुभवों को सांझा जो संस्थान के सभी सदस्यों के लिए बहुत ही प्रेरणादायक था। तत्पश्चात संस्थान छात्रों की नाट्यकला समिति के तत्वावधान में "मौत का खत" शीर्षक नामक एक नाटक का आयोजन किया गया जो भविष्य के अभियंताओं की कला प्रियता को प्रदर्शित कर रहा था। नाटक का आयोजन सफल रहा। छात्रों ने अपने अभिनय से उपस्थित जनसमूहों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दिनांक 14.09.2015 को हिंदी दिवस की संकल्पना के साथ हिंदी दिवस का अनुपालन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय परंपरानुसार दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। तत्पश्चात संस्थान छात्रों द्वारा माँ सरस्वती की वंदना की गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार, मुख्य अतिथि प्रो. स्मरप्रिया मिश्रा, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्षा (हिंदी विभाग) और डॉ.राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी (राजभाषा) का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए श्री नितिन जैन ने राजभाषा के ऐतिहासिक पहलुओं पर प्रकाश डाला और वर्तमान में राजभाषा हिंदी की वास्तविक स्थिति से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए डॉ. राज कुमार सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों एवं कर्मचारियों का मुक्त हृदय से स्वागत किया एवं सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिंदी इस देश की सबसे सरल एवं सहज भाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हुई है। संविधान के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है तथा लिपि देवनागरी है और सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतर्राष्ट्रीय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने अभिभाषण में हिंदी के ऐतिहासिक पहलुओं के साथ भोपाल में आयोजित दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान कहीं गई मुख्य बातों पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही उन्होंने सभी उपस्थित जनगणमान्यों को अपने दैनिक जीवन में हिंदी के प्रति जागरूक होने की अपील की। तदोपरांत श्री नितिन जैन ने परंपरानुसार हिंदी दिवस पर गृह मंत्री का संदेश पढ़ा। 10 वें विश्व हिंदी सम्मेलन में संस्थान का प्रतिनिधित्व कर चुके डॉ. अखिलेश बर्वे ने विश्व हिंदी सम्मेलन से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की और वहाँ लिए निर्णयों से सभी को अवगत कराया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार ने सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी और कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और इसे राष्ट्रभाषा बनाने के लिए हमें प्रयत्न करना होगा। हमारे देश में विभिन्न राज्य है और विभिन्न राज्यों की भिन्न-भिन्न भाषाएं है। इन सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है। हमारे देश में विविधताओं के बावजूद भी हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसने हम सभी को एक माला में पिरोकर रखा है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. स्मरप्रिया मिश्रा, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्षा (हिंदी) ने अपने संबोधन में हिंदी के महत्वपर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में हमारी भूमिकाओं पर प्रकाश डाला और सभी को अपने-अपने दायित्वों का स्मरण कराया। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी के स्थान पर हिंग्लिश की प्रयुक्तता पर खेद व्यक्त किय और सभी से हिंदी के प्रति अपनी संवैधानिक दायित्वों निर्वाहन हेतु अपील की।

उनके संबोधन के उपरांत 12-13 सितंबर के दौरान संस्थान छात्रों के लिए आयोजित निबंध, आवाज़ दिल की और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात संस्थान के निदेशक ने कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि प्रो. स्मरप्रिय मिश्रा को संस्थान स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

हिंदी दिवस की संध्या पर संस्थान के सभी सदस्यों के लिए "काव्य सरिता" शीर्षक के अधीन हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत के प्रमुख कवियों की मंडली ने कविता पाठ कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अंत में प्रो. पी. सी. पांडेय, अभ्यागत प्राध्यापक ने सभी कवियों के प्रति आभार व्यक्त किया और उन्हें सम्मानित किया। दिनांक 16.09.2015 को संस्थान कर्मचारियों के लिए हिंदी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

संस्थान के कर्मचारियों के लिए दिनांक 18.09.2015 को "कार्यालयीन हिंदी का व्यवहारिक ज्ञान एवं राजभाषा नीति का कार्यान्वयन" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रधान महालेखा परीक्षक कार्यालय, भुवनेश्वर के हिंदी अधिकारी श्री आर.एन.चाँद मुख्य वक्ता के रूप उपस्थित थे। उन्होंने कार्यशाला के दौरान राजभाषा नीति की प्रासिंगताओं पर बल दिया और वहीं श्री नितिन जैन ने कार्यालयीन हिंदी और साहित्यिक हिंदी के भेदों के अंतर को स्पष्ट करते हुए दैनिक कार्यालयीन कामकाज को हिंदी में कार्य करने में हो रही झिझक को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में कुल 13 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। तत्पश्चात इसी दिन सांध्य 05.00 बजे संस्थान के कर्मचारियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 21 सितंबर 2015 को सांध्य 05.00 बजे हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में परंपरानुसार अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.के. सिंह प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा ने की। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. राज कुमार सिंह ने इस दौरान आयोजित विजयी प्रतिभागियों को बधाई दी और उपस्थित सभी सहकर्मियों से हिंदी में कार्य करने की अपील की। तदोपरांत श्री नितिन जैन ने विजयी प्रतिभागियों की घोषणा की और विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

इस दौरान कुल 12 पुरस्कार तथा 05 सांत्वना पुरस्कार वितरित किए गए। तत्पश्चात धन्यवाद ज्ञापन देते हुए श्री जैन ने संपूर्ण आयोजन के लिए सभी उच्च पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया और कहा कि संस्थान में हम निरंतर प्रयास करेंगे कि हिंदी की गतिविधियों को कैसे बढ़ाया जा सके जिससे कि आगामी वर्ष इस दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में और अच्छी सहभागिता रहें।

नई नियुक्तियाँ

1. श्री चंद्र वड्डे ने दिनांक 11.09.2015 को संस्थान में 'प्रोग्रामर' (संविदा) पद पर कार्यग्रहण किया और उन्हें कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रकोष्ठ (सीआईटीएससी) में पदस्थापित किया गया।

2. श्री अब्दुल कादर एलकेएम ने दिनांक 15.09.2015 को संस्थान में 'प्रणाली प्रशासक' (संविदा) पद पर कार्यग्रहण किया और उन्हें कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रकोष्ठ (सीआईटीएससी) में पदस्थापित किया गया।

3. श्री भारतेंदु मिश्र ने दिनांक 05.10.2015 को संस्थान में 'सह नेटवर्क प्रशासक' (संविदा) पद पर कार्यग्रहण किया है और उन्हें कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रकोष्ठ (सीआईटीएससी) में पदस्थापित किया गया।

4. सुश्री सीमा कौशर ने दिनांक 26.10.2015 को 'वेब विकास सहायक' (संविदा) पद पर कार्यग्रहण किया और उन्हें कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं प्रकोष्ठ (सीआईटीएससी) में पदस्थापित किया गया।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. योगेश जी. भुमकर, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 01-04 सितंबर 2015 के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफर्ड, यू.के द्वारा आयोजित "न्यूमेरिकल मैथेड्स फॉर सिमुलेशन एट मैथेमेटिकल इंस्टीट्यूट पर आईएमए सम्मेलन" में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।

2. डॉ. टी.वी.एस.शेखर, सह प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 01-04 सितंबर 2015 के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफर्ड, यू.के द्वारा आयोजित "न्यूमेरिकल मैथेड्स फॉर सिमुलेशन एट मैथेमेटिकल इंस्टीट्यूट पर आईएमए सम्मेलन" में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।

3. डॉ. ए. सत्यनारायण, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विद्यापीठ ने दिनांक 01-04 सितंबर 2015 के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफर्ड, यू.के द्वारा आयोजित "न्यूमेरिकल मैथेड्स फॉर सिमुलेशन एट मैथेमेटिकल इंस्टीट्यूट पर आईएमए सम्मेलन" में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।

4.प्रो. गणपति पंडा ने दिनांक 06.08.2015 से 02.09.2015 तक टेक्सेस ए एवं एम विश्वविद्यालय में सहयोगात्मक कार्य में भाग लिया।

5. डॉ. अखिलेश वर्बे, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 10-12 सितंबर 2015 के दौरान भोपाल में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया और संस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

6. डॉ. सच्चिदानंद रथ, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ को दिनांक 10.09.2015 से 11.09.2015 के दौरान "इलेक्ट्रिक पॉलराइजेशन स्टडीज़ ऑफ गोल्ड क्लस्टर्स" विषय में अनुसंधान कार्य हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर का दौरा किया।

7. डॉ. शांतनु पाल, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ को दिनांक 26.09.2015 से 27.09.2015 के दौरान भा.प्रौ.सं. गुवाहटी में आयोजित संयुक्त कार्यान्वयन समिति 2016 (जेआईसी 2016) की बैठक में भाग लिया।

8.प्रो.पी.के.जे.मोहपात्रा, अभ्यागत प्राध्यापक ने दिनांक 23-24 अक्तूबर 2015 के दौरान भा.प्रौ.सं. मुम्बई में आयोजित सिस्टम डायनामिक्स ऑफ इंडिया पर वार्षिक कार्यशाला में मुख्य भाषण प्रस्तुत किया।

9. डॉ. एन.सी. साहू, सह प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 24-31 अक्तूबर 2015 के दौरान कनाडा में आयोजित "इलेक्ट्रिकल पावर एवं एनर्जी कॉन्फरेंस-2015" में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।

10. डॉ. सब्रमलाई मणिकंदन, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 26-31 अक्तूबर 2015 के दौरान टुर्कू विश्वविद्यालय, फीनलैंड में आयोजित "हेल्थ, ड्रग डेवलेप्मेंट एंड डॉयगनॉस्टिक पर प्रथम फिनिश-इंडिया ज्वाइंट सिम्पोजियम" में पेपर प्रस्तुत किया।

11. श्री निहार रंजन पंडा, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक ने दिनांक 30-31 अक्तूबर 2015 के दौरान बीकानेर, राजस्थान में आयोजित कंडेस्ड मैटेरियल पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "ल्यूमिनेसेन प्रोपर्टिज़ ऑफ रेअर अर्थ डॉप्ड मेटल ऑक्साइड नैनोस्ट्रक्चर : ए केस ऑफ Eu -Zno" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

12. डॉ. बिभूति भूषण, उप पुस्तकालयाध्यक्ष ने दिनांक 29 -30 अक्तूबर 2015 के दौरान मिजोराम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में एनएएसएसडीओसी (आईसीसीआर) द्वारा प्रायोजित "नॉलेज ऑर्गनाइजेशन" पर कार्यशाला-सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

सम्मान

1. डॉ. सी.एस.राउत, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ को रॉयल सोसाटी ऑफ कैमेस्ट्री के उच्च प्रभावशाली जरनल के सह संपादक के रूप में नियुक्त किया गया।

2. डॉ. पी. भुईंया, सहायक प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ को हैजर्ड्स, टॉक्सिक एवं रेडियोएक्टिव वेस्ट के एक प्रतिष्ठत जरनल एएससीई के सह संपादक के रूप में नियुक्त किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान – 2015

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्मजयंती पर 02 अक्तूबर 2015 को संस्थान के अरगुल परिसर में पूर्वाह्न 09.30 बजे स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार, वरिष्ठ संकाय सदस्य, स्टाफ सदस्य एवं छात्रों ने परंपरानुसार गांधी जी की फोटो पर पुष्प अर्पित किया। इस दौरान संस्थान कुलसचिव ने उपस्थित सभी सदस्यों को स्वच्छ भारत अभियान की शपथ दिलवाई।

निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में स्वच्छता पर जोर देते हुए कहा कि गांधीवादी दर्शन के मूलभूत सिद्धांत आज भी हमारे बीच प्रासंगिक बने हुए है। महात्मा गांधी जी, एक अच्छे विचारक, दर्शाशास्त्री एवं देश के राष्ट्रपिता थे और इनका नेतृत्व, सहजता एवं सत्याग्रह निरंतर हमारे आदर्श बने रहेंगे। उन्होंने अपने संबोधन में आशा व्यक्त करते हुए कहा कि सामान्य रूप से विश्व को और विशेष रूप से हमारे आईआईटी परिवार के सदस्यों को सहशताब्दी के इस महापुरुष के सिद्धांतों से प्रेरणा लेनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम सभी को गांधीवादी दर्शनशास्त्र एवं देश की कुशलता के लिए एक जुटकर होकर कार्य करना चाहिए जिससे इसका लाभ समुचित समुदाय को मिल सके। इसके साथ ही उन्होने माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा अपनी मातृभूमि की स्वच्छता के आह्वान का स्मरण कराते हुए संस्थान के सभी सदस्यों को संस्थान परिसर को स्वच्छ रखने के लिए आगे बढ़ने की अपील की। कार्यक्रम के अंत में संकायों, छात्रों एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा परिसर की साफ सफाई की गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2015

संस्थान ने केंद्रीय सतकर्ता आयोग की अधिसूचना के आधार पर 26-31 अक्तूबर 2015 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान प्रेक्षागृह, सामंतपुरी परिसर में आयोजित किया गया। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय "सुशासन के लिए साधन के रूप में सुरक्षात्मक सतर्कता" था। समारोह को संबोधित करते हुए संस्थान निदेशक ने इसकी महत्ता को स्वीकार करने पर बल दिया और कहा कि इस वर्ष का विषय भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में मदद करेगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम सभी को अपने नैतिक मानकों के मूल्यों को समझते हुए राष्ट्र निर्माण के लिए अपना योगदान देना चाहिए। तदोपरांत निदेशक महोदय ने इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों को सतर्कता जागरूकता की शपथ दिलाई और माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी का संदेश पढ़ा।

तदोपरांत प्रो. सुजीत रॉय (संकाय एवं नियोजन) एवं प्रो. वी.आर. पेदिरेड्डी, संकायाध्यक्ष (सीई) ने माननीय उप राष्ट्रपति एवं माननीय प्रधानमंत्री का संदेश पढ़ा। कार्यक्रम का संचालन श्री देबराज रथ, उप कुलसचिव ने किया।

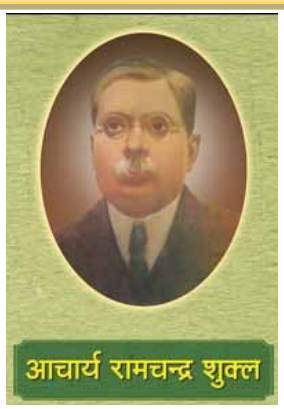

साहित्य मंच

आचार्य रामचंद्र शुक्ल 04 अक्टूबर, 1884 का जन्म बस्ती, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वे बीसवीं शताब्दी के हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार थे। उनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक है **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, जिसके द्वारा आज भी काल निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है। शुक्ल जी ने इतिहास लेखन में रचनाकार के जीवन और पाठ को समान महत्व दिया। हिंदी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात उन्हीं के द्वारा हुआ। हिन्दी निबंध के क्षेत्र में भी शुक्ल जी का महत्वपूर्ण योगदान है। भाव, मनोविकार संबंधित मनोविश्लेषणात्मक निबंध उनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उन्होंने प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से साहित्यिक प्रत्ययों एवं रस आदि की पुनर्व्याख्या की।शुक्ल जी हिंदी साहित्य के कीर्ति स्तंभ हैं। हिंदी में वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात उन्हीं के द्वारा हुआ। तुलसी, सूर और जायसी की जैसी निष्पक्ष, मौलिक और विद्वत्तापूर्ण आलोचनाएं उन्होंने प्रस्तुत की वैसी अभी तक कोई नहीं कर सका। शुक्ल जी की ये आलोचनाएं हिंदी साहित्य की अनुपम विधियां हैं। निबंध के क्षेत्र में शुक्ल जी का स्थान बहुत ऊंचा है। वे श्रेष्ठ और मौलिक निबंधकार थे। हिन्दी में गद्य -शैली के सर्वश्रेष्ठ प्रस्थापकों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने अपने दृष्टिकोण से भाव, विभाव, रस आदि की पुनर्व्याख्या की, साथ ही साथ विभिन्न भावों की व्याख्या में उनका पांडित्य, मौलिकता और सूक्ष्म पर्यवेक्षण पग -पग पर दिखाई देता है। हिन्दी की सैद्धांतिक आलोचना को परिचय और सामान्य विवेचन के धरातल से ऊपर उठाकर गंभीर स्वरुप प्रदान करने का श्रेय शुक्ल जी को ही है। "काव्य में रहस्यवाद" निबंध पर इन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी से 500 रुपये का तथा चिंतामणि पर हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग द्वारा 1200 रुपये का मंगला प्रशाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था। उनकी 131 वीं जन्म जयंती पर प्रस्तुत है उनकी काव्य रचना **" विनती"** :-

जय जय जग नायक करतार।
करत नाथ कर जोरि आज हम विनती बारम्बार।
प्रात समीर सरिस भारत महँ हिन्दी करै प्रसार ।।

जय जय जग नायक करतार।
खोलै परखि उनीदे नयनन दरसावैं संसार।
बुधा हिय सागर बीच उठावै भाव तरंग अपार ।।

जय जय जग नायक करतार।
देश देश के मृदु सुमनन सों भरि सौरभ को थार।
बगरावै यदि भूमि बीच जो हरै समाज विकार ।।

जय जय जग नायक करतार।
मेटे सब असान ताप करि शीतलता संचार।
विविध कला किसलय कल रणदरावै प्रतिद्वार ।।
जय जय....

मार्गदर्शक : डॉ. राज कुमार सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)
सलाहकार : डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस एवं डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस
संपादक : श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक